ISSN: 0974-5823 Vol. 7 (Special Issue, Jan.-Mar. 2022)

International Journal of Mechanical Engineering

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

डॉ. श्रद्धा हिरकने
सह–प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

भारतीय वांग्मय में राष्ट्र शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता रहा है। यजुर्वेद के राष्ट्रीय में 'देहि' और अथर्ववेद के 'त्वा राष्ट्र भृत्याय' में राष्ट्र शब्द समाज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मानव की सहज सामुदायिक भावना ने समूह को जन्म दिया जो कालांतर में राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। राष्ट्र एक समुच्चय है और राष्ट्रीयता एक विशिष्ट भावना है। जिस जन समुदाय में एकता की एक सहज लहर हो उसे राष्ट्र कहते हैं। आर्यों की भूमि आर्यावर्त में एक बाह्य एकता के ही नहीं वैचारिक एकता के भी प्रमाण मिलते हैं। आर्यों की परस्पर सहयोग तथा संस्कारित सहानुभूति की भावना राष्ट्रीय संचेतना का प्रतिफल है। साहित्य का मनुष्य से शाश्वत संबंध है साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है।

समाज का राष्ट्र से सीधा संबंध है। किसी भी संस्कारित समाज की विशिष्ट जीवन शैली होती है जो कि राष्ट्र के रूप में दूसरे समाज को प्रभावित करती है। रूढ़ियों एवं विकृत परंपराओं से जर्जर समाज राष्ट्र को पतन की ओर ले जाता है कवि मोह निद्रा में डूबे राष्ट्र को जागृति के गान गाकर संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्रीय जैसी उदात्त प्रवृत्तियों का पोषण और उन्नयन साहित्य के द्वारा होता है। हिंदी साहित्य राष्ट्रीयता की भावना अनंत काल से चली आ रही है। राष्ट्रीय विचारधारा अविरल गति से हिंदी में बहती आई है। इसने राष्ट्रीय चेतना के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर –

भक्ति काल के महात्मा कबीर ने निराकार ब्रह्म की उपासना का उच्च आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्रीय गरिमा में नवजीवन का संचार किया। राम और रहीम को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। कबीर अपने युग के महान राष्ट्रवादी थे। राष्ट्र भक्त तुलसी ने राम के समन्वय वादी, लोक रक्षक स्वरूप और लोक रंजक स्वरूप को स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को शक्ति प्रदान की। सूर ने कर्मयोगी कृष्ण की विविध

लीलाओं के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना का संचार किया और समाज को सत्कर्म के लिए प्रेरित किया। रितिकालीन कविवर भूषण ने राष्ट्रवादी स्वरों की झंकार ने लोक चेतना में हलचल उत्पन्न कर दी। अठ्ठारह सौ सत्तावन से लेकर जो मुक्तिसंग्राम चला उसमें कवियों और शायरों ने अपनी कविताओं, गीतों और गजलों के माध्यम से राष्ट्र को जागृति का संदेश दिया। स्वतंत्रता संग्राम की धूम देश में मच रही हलचल ने कवियों को राष्ट्रवादी काव्य की गंगा बहाने के लिए प्रेरित किया। स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए कवि व साहित्यकार राष्ट्रीय भावों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना का संचार कर रहे थे। भारतीय स्वतंत्रता के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक राष्ट्रीय भावना लिए हुए कविताओं के गर्भ में राष्ट्रीय चेतना का विकास होता रहा। 1857 में पहला अखबार निकला पयामे आजादी।

आधुनिक काल मैं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी लेखनी के जादू से भारत दुर्दशा का चित्रांकन कर समाज को जागृति का संदेश दिया। इसी प्रकार प्रेमघन की अरुणोदय, देश दशा, राधा कृष्ण की भारत की बारहमासा के साथ राजनीतिक चेतना की धार तेज हुई। द्विवेदी युग में कविवर शंकर ने शंकर सरोज, शंकर सर्वरूप, गर्भ रंडा रहस्य के अंतर्गत बलिदान गान में 'प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा' के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी। 'वज्रनाद से व्योम जगा दे देव और कुछ लगा दे' के ओजस्वी हुंकार द्वारा भारतभारतीकार मैथिलीशरण गुप्त के द्वारा पहला राष्ट्रवादी स्वर उठा। गुप्त जी की भारत भारती पढ़कर भारत के सैकड़ों नौजवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ और वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े, उन्होंने अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाही का मुकाबला किया और जेल यातनाएं सही।

''हम कौन थे क्या हो गए,
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारे बैठकर,
यह समस्याएं सभी''

छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के रागात्मक स्वरूप को ही प्रमुखता दी और उसी की परिधि ने अतीत के सुंदर और प्रेरणादायी राष्ट्रवादी मधुर गीतों व कविताओं की रचना की। निराला की 'वर दे वीणावादिनी वर दे', 'भारती जय विजय करे', 'जागो फिर एक बार', 'शिवाजी का पत्र' प्रसाद की 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' चंद्रगुप्त नाटक में आया 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' आदि कविताओं में कवियों ने राष्ट्रीयता की भावना की प्रशस्त अभिव्यक्ति दी है।

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने काव्य हिमकिरीटनो, हिम तरंगिणी, माता, युग चरण, समर्पण काव्य कृतियों की रस की धारा से राष्ट्रीयता का भाव जागृत किया। चतुर्वेदी जी ने

भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर जनतंत्रात्मक की पद्धति की स्थापना का संकल्प किया इनकी कविता में संघर्ष की प्रबल प्रेरणा मिलती है। जेल की हथकड़ी उनके जीवन को अलंकृत करती है।

''क्या? देखना शक्ति जंजीरों का गहना,
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज्य का गहना''

(कैदी और कोकिला)

स्वाधीनता के प्रति समर्पण भाव ने इनके जीवन को एक राष्ट्रीय सांचे में ढाल दिया।
उनके हृदय म चाहा है,
अपने हृदय में आह है,
कुछ भी करें तो शेष,
बस यह बेडियो की राह है।

पुष्प की अभिलाषा शीर्षक कविता की पंक्तियां भारतीय आत्मा की पहचान कराती हैं।

''मुझे तुम तोड़ लेना वनमाली

देना उस पथ पर फेंक

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने

जिस पथ जावें वीर अनेक''

राष्ट्रीय काव्यधारा की कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का त्रिधारा और मुकुल की राखी, झांसी की रानी, वीरों का कैसा हो बसंत आदि कविताओं में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है। जलियांवाला बाग में बसंत कविता में कवित्री ने नृशंस हत्या कर करुणा का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा है –

''आओ प्रिय ऋतुराज
किंतु धीरे से आना
यह अशोक स्थान
यहां मत शोर मचाना
कोमल बालक मरे
यहां गोली खा खाकर
कलियां उनके लिए चढ़ाना
थोड़ी सी लाकर।''

रामधारी सिंह दिनकर स्वतंत्रता पूर्व के विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवादी कवि के रूप में जाने जाते रहे। कवि दिनकर के काव्य ने भारतीय जनमानस को नवीन चेतना से सराबोर किया है। कुरुक्षेत्र महाकाव्य राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है।

''लड़ना उसे पड़ता मगर
औ, जीतने में वह देखता है
स्वयं को रोता हुआ
वह सत्य है जो रो रहा
इतिहास के अध्याय में
विजयी पुरुष के नाम पर
कीचड़ नयन का डालता।''

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत कविताओं को रचकर राष्ट्रीय भाव जागृत किया।

''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल–पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए
एक हिलोर उधर से आए
नश। नाश। हां महा नाश।
की प्रलयंकारी आंख खुल जाए।''

कवि जयशंकर प्रसाद की देश को समर्पित अपनी मातृभूमि के चरणों में अर्पित यह पंक्तियां –

''अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।''

देश पर मर मिटने का संदेश देते हुए रामनरेश त्रिपाठी जी की भावनाएं उनकी निम्नलिखित पंक्तियों में दिखाई पड़ती है –

''तुम जिसका जल–अन्न

ग्रहण कर बड़े हुए
लेकर जिसका रज
तन रहते कैसे तज दोगे
उसको हे वीरों के वंशज''

कविवर श्याम नारायण पांडे ने महान राष्ट्र प्रेमी महाराजा के चरित्र के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना फैलाने का कार्य किया। उदाहरण देखिए –

''अपना सब कुछ लुटा दिया,
जननी पद नेह लगाकर
कलित कीर्ति फैला दी है,
निद्रित मेवाड़ जगा कर
जग वैभव उत्सर्ग किया
भारत का वीर कहा कर
माता मुख लाली प्रताप ने
रख ली लहू बहा कर
भीषण प्रण तक किया रक्त से
समर सिंधु भर डाला
ले नंगी तलवार बढ़ा
सबकुछ स्वाहा कर डाला।''

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हर युग में जो साहित्य लिखा गया है उसका प्रभाव साहित्य का समाज पर और समाज का साहित्य पर पड़ रहा है। गणेश शंकर विद्यार्थी, महात्मा गांधी आदि जैसे संपादकों ने लेख और संपादकीय लिखकर लोगों को देश प्रेम की प्रेरणा दी। राष्ट्रीयता का भाव मानव का प्रथम पायदान है कवियों ने कविता, गीतों, गजलों, लेखों, संपादकीय आदि के माध्यम से जन–जन तक व्यक्ति के अंदर राष्ट्रीयता का संचार किया यानी हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय चेतना की सुप्त धारा को नई दिशा मिली और जन जागरण को नई चेतना और जागृति मिली। इस प्रकार हिंदी साहित्य के आदिकाल से अब तक के साहित्य का अवलोकन करते हैं तब इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि राष्ट्रीयता की भावना एक पावन सरिता की तरह प्रवाहित होती रहती है। परिस्थितियों के कारण इसमें कभी–कभी अवरोध अवश्य उपस्थित होता है परंतु इसकी धारा निरंतर गतिशील रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– मोहनलाल जाट ''स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में राष्ट्रीय चेतना''

2– सतीश दुबे ''स्वदेश की साहित्य चेतना'' विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

3– डॉ शांति जैन ''लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना'' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।

4– भारत की राष्ट्रीय चेतना

5– भारत के शक्ति के स्त्रोत

6– बृहद निबंध साहित्य

7– हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा